Edit with WPS Office

पाठ - 7

लालच का फल

विधा - कविता

शब्दार्थ - **कापी कार्य**

ज्ञान - अच्छी बातें

भजन - ईश्वर का गायन

मिसिरी - मिश्री (शक्कर से बना हुआ मीठा पदार्थ)

संन्यासी - साधु

पुण्य - अच्छे कर्म

मीठे - मधुर

घातें - चालें

ज्यों ही - जैसे ही

झट - तुरंत

भोग लगाया - खा लिया

भावार्थ -

मुहँ में मिसिरी..... पुण्य कमाई।

अर्थ - म्याऊँ - म्याऊँ करते हुए बिल्ली मौसी चूहे से इस प्रकार बोली जैसे मौसी के मुँह में मिसिरी घुली हुई हो अर्थात बिल्ली मौसी के बोलने में बहुत ही मीठापन था। वह आगे कहने लगी कि मैं संन्यासिनी बनकर आई हूँ और पुण्य कमाई के लिए निकली हूँ।

डरो नहीं तुम चूहे..... भजन सुनाऊँ।

बिल्ली मौसी चूहे से कहने लगी, "हे चूहे भइया! तुम डरो नहीं, मेरे साथ आकर मिठाई खाओ।" (संन्यासिनी के वषे में ही थी) तो चूहे से कहने लगी, "मैं तुम्हें ज्ञान की बातें बताऊगी और मधुर स्वर में भजन सुनाऊँगी।"

सुन मौसी..... भोग लगाया।

बिल्ली मौसी की झूठी बातें सुनकर (लालची) चूहा बिल्ली मौसी की चालें नहीं समझ पाया। चूहे का मन मौसी के हाथ में मिठाई देखकर ललचाने लगा और उसके मुँह में पानी आ गया। चूहा जैसे ही अपने बिल से निकल कर बाहर आया वैसे ही बिल्ली मौसी ने तुरंत चूहे का भोग लगा दिया अर्थात झपट कर चूहे को खा गई।

सोचो और बताओ **कॉपी कार्य**

(क)संन्यासी के वेष में कौन आया?

Edit with WPS Office

(उ.)संन्यासी के वेष में बिल्ली आई थी।

(ख)ज्ञान का पाठ पढ़ाने को किसने कहा?

(उ.)ज्ञान का पाठ पढ़ाने के लिए बिल्ली मौसी ने कहा।

(ग) किसके मुँह में पानी आ गया।

(उ.)चूहे के मुँह में पानी आ गया।

(घ)पुण्य कमाई करने कौन निकली?

(उ.)पुण्य कमाई करने के लिए बिल्ली मौसी निकली।

निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दो **कापी कार्य**

(क) मौसी कैसा वेष बनाकर आई?

(उ.) मौसी संन्यासी का वेष बनाकर आई।

(ख) मौसी क्या करने निकली थी?

(उ.) मौसी चूहे को खाने के लिए निकली थी।

(ग) मिठाई देखकर किसका मन ललचाया?

(उ.) मिठाई देखकर चूहे का मन ललचाया था।

(घ) मौसी ने किसका भोग लगाया?

(उ.) मौसी ने चूहे का भोग लगाया।